(ल)

ISBN : 978-81-89187-64-4

पुस्तक	:	हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य
संपादक	:	डॉ. कल्पना विनायक देशपाण्डे
प्रकाशक	:	विनय प्रकाशन 3ए-128, हंसपुरम्, कानपुर-208021 (उ.प्र.) सम्पर्क : 0512-2626241, 09415731903 Email - vinayprakashankanpur@gmail.com visit us at : www.vinayprakashan.com
संस्करण	:	प्रथम, 2019
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मूल्य	:	900/- (नौ सौ रुपए मात्र)
मुद्रण	:	पूजा प्रिन्टर्स, कानपुर।

Hindi Ka Vaishvik Paridrishya
Edited : *Dr. Kalpana Vinayak Deshpande*
Price : Nine Hundred Rupees Only.

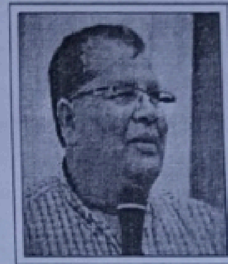

शुभ संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि कर्नाटक के बीदर में 'कर्नाटक, आर्ट्स, साईंस और कॉमर्स कॉलेज' द्वारा 'वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी साहित्य' विषय पर दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। भारत के अतिरिक्त विश्व के अनेक देशों में हिन्दी भाषा और साहित्य पर गम्भीरता से कार्य किए जाते हैं। मॉरीशस इस दिशा में अन्य देशों की अपेक्षाकृत अधिक गम्भीरता से कार्य कर रहा है। गिरमिटिया मजदूरों और उनके परिजनों द्वारा भारतीय संस्कृति और हिन्दी भाषा को मॉरीशस में बनाए रखने का जो कार्य वर्षों से किया जा रहा है वह हिन्दी को विश्व भाषा बनाने में विशेष सहयोग देता है।

दक्षिण के अहिन्दी भाषी प्रदेश में हिन्दी भाषा पर वैश्विक चिन्तन होना अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य है। मैं इस संगोष्ठी के लिए अपनी शुभकामनाएं आयोजकों और अन्य सहयोगियों को प्रेषित करता हूँ।

–राज हीरामन
मॉरीशस

दिनांक : 22 दिसंबर 2018

हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य

प्रधान संपादक
डॉ. कल्पना विनायक देशपाण्डे

सह-संपादक
प्रा. आनन्दराव देवेन्द्रप्पा शेरिकार
प्रो. दयानन्द सुरवसे, डॉ. सविता तिवारी, कैप्टन डॉ. अनिता शिंदे
प्रा. धन्यकुमार जिनपाल बिराजदार

विनय प्रकाशन
कानपुर - 208021 (उ.प्र.)

65. विश्व में हिन्दी की स्थिति एवं गति 296
श्रीमती रंजना पाटिल
66. वैश्वीकरण की प्रक्रिया एवं हिन्दी भाषा 301
नरसिंग आर्य
67. वैश्वीकरण और अनुवाद 305
स्मिता सीतफले
68. विश्व में हिंदी की स्थिति एवं गति 306
प्रा.डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी
69. वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य 312
डॉ. सोनाली मेहता
70. वैश्वीकरण में हिन्दी की स्थिति गति 316
चंद्रकांत बिरादार
71. हिंदी संतकाव्य तथा हिंदी भाषा की वैश्विक
परिदृश्य में भूमिका 319
डी.एस. घटुकडे
72. संत कबीर के साहित्य में विश्व शान्ति का सन्देश 322
प्रा. डॉ. भोसले जी. एस.
73. हिंदी के विकास में प्रवासि भारतीय साहित्यकारों का योगदान 326
डी. शिवाजी
74. इक्कीसवों सदी में हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य 330
कोतलापूरे मयुरी नारायण
75. विश्व में हिंदी की स्थिति एवं गति 333
प्रा. राम दगडू खलंग्रे

71

हिंदी संतकाव्य तथा हिंदी भाषा की वैश्विक परिदृश्य में भूमिका

डी.एस. घटुकडे

आज भारत की स्थिति वैश्विक परिदृश्य में महत्त्वपूर्ण बनती जा रही है। विश्व में आज शक्तिशाली राष्ट्र बनने की एक–दूसरे में होड़ मची हुई है। विश्व के बड़े–बड़े देशों के सहयोग से देश अपने–अपने सभी क्षेत्रों में प्रगति पथ पर है। आज भारत देश की बात की जाए तो भारत वैश्विक स्तर पर अपना अस्तित्व सिद्ध कर चुका है। इसको एकसंध में जोड़ने का कार्य अंग्रेजी के साथ–साथ हिंदी ने भी अपनी अहम भूमिका निभाई है। अनेक वैश्विक यात्रा के दौरान हिंदी तथा अंग्रेजी सेतु का काम करती है इसके कारण 21 वीं शती में व्यापार, आयात–निर्यात, प्रशिक्षण केन्द्र आदि के बारे में अनेक समझौते भी हो चुके हैं।

21 वीं सदी में वैश्विक स्तर पर बहुत–सी समस्याओं ने अपना ढंग दिखाया है, जिसमें प्रमुख है, आतंकवाद। आज विश्व के सभी देशों की आम जनता आतंकवाद से त्रस्त है। साथ ही धार्मिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय, पारिवारिक समस्याओं से आम आदमी पूरी तरह घायल हो चुका है। 21 वीं सदी में मनुष्य इतना व्यस्त है कि वह अपने आस–पास के भी पड़ोसी से बातचीत के लिए भी समय नहीं निकाल पा रहा है। वह अपने खान–पान, सेहत आदि की ओर बहुत कम ध्यान दे पा रहा है। इससे पूरे विश्व में मानसिक एवं शारीरिक बीमारियों ने अपना सिर ऊँचा कर रखा है। जिस प्रकार आतंकवाद यह समस्या है वैसे ही डायबीटिस, मोटापा, ब्लडप्रेशर आदि समस्याओं से लोग त्रस्त है। इन समस्याओं का कारण ही यह है कि लोगों की स्वार्थीवृत्ति, टेन्शन तथा नैतिक से परे व्यवहार।

'संत सम्प्रदाय विश्व सम्प्रदाय है और उसका धर्म विश्वधर्म है। इस विश्वधर्म का मूलाधार है–हृदय की पवित्रता पैदा होगी तब आतंकवाद, हिंसाचार, बलात्कार जैसे मनुष्य कृत दुराचार अपने आप लुप्त होकर तुलसी

के रामराज्य की कल्पना साकार हो सकती है। संत कवियों का लक्ष्य काव्य रचना नहीं था, उनकी रचनाओं में जन–जन के हित और उनके उद्‌बोधन की भावना के पास रखना है। संत काव्य में कबीर ने विश्व बंधुत्व का संदेश 13–14 वीं शती में दिया है वे कहते हैं–

"जाति पांति पूछे नहिं कोई,
हरि को भजे सो हरि का होई।"

उनके कहने का मतलब है जब ईश्वर ने मनुष्य–मनुष्य में भेद नहीं किया तो आप कौन होते हो भेदभाव करनेवाले? आज 21 वीं शती में कबीर का कहना मानना चाहिए क्योंकि मुस्लिम, अमरित, सोवियत राष्ट्रों की आपस में भेदभाव करने की वृत्ति अभी तक लोगों के दिमाग से नहीं गई है। कबीर ने हमें उस समय दिशा दिखाने का कार्य किया और उनका साहित्य आज भी विश्वस्तर पर भाईचारा निभाने की सिख दे रहा है।

आर्थिक अभाव, अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव, स्वतंत्र रहने की चाह आदि ने वैश्विक स्तर पर पारिवारिक संबंधों में तनाव की स्थितियों का निर्माण किया है। इससे संयुक्त परिवार टूटकर एकल परिवारों का निर्माण हो रहा है। "पुरानी मान्यताओं के विरोध ने माता–पिता के जीवन में होनेवाले हस्तक्षेपों से दूर हटने की प्रवृत्ति ने पारिवारिक संबंध तनावपूर्ण बनते जा रहे हैं। शिक्षितों की आत्मकेंद्रियता ने एकल परिवार का निर्माण करके पारिवारिक तनावों को खड़ा किया।" यह विश्वस्तर की समस्या बन चुकी है। हम नैतिकता को पूरी तरह भूल चुके हैं; हर एक आदमी को कोई न कोई दुःख है, धन कमाने की चाह है लेकिन पारिवारिक संबंध बचाकर रखकर और नैतिकता को संभलकर रहने का संदेश संत कवि लालदास इसप्रकार देते हैं–

"लालजी भगत भीख न मांगिये, मांगत आये शरम।
घर घर टांडत दुःख है, क्या बादशाह, क्या हरम।।
लालजी साधु ऐसा चाहिए, धन कमाकर खाय।
हिरदे हर की चाकरी, पर घर कभू न जाय।।"

21 वीं सदी में विश्व स्तर पर जातिगत, वंशगत, धर्मगत, संस्कारगत रूढ़ियों और परंपरा के मायाजाल ने बुरी तरह छिन्न–छिन्न किया है। कोई भगवा, कोई निला, कोई हरा अपने–अपने धर्म का पताका लेकर अपने आप को शिक्षित एवं पंडित कहने में लगा है। कबीर ने इसकी पूरी तरह निंदा की है। जनवादी कबीर ने सम्यक् रूप से सर्व साधारण जनता के लिए एक सामान्य मार्ग का निर्देश किया है–

"पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढ़ाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।"

यह आज भी हमारे समाज के लोगों को मान्य होता है। कबीर ऐसे ही मिलन बिन्दू पर खड़े थे जहां से एक ओर हिंदुत्व निकल जाता है और दूसरी ओर मुसलमान। इसप्रकार संत साहित्यकारों ने अपने–अपने तरीके से समाजसुधारक कार्य किया है। जो वैश्विक परिदृश्य से प्रासंगिक है।

हिंदी का प्रचार एवं प्रसार हेतु महात्मा गांधी ने हिंदुस्थानी प्रचार सभा की स्थापना की वैसे ही अनेक संस्थाओं ने हिंदी का प्रचार–प्रसार किया। उनका मकसद ही यहीं था कि हिंदी साहित्य में से गांधीवादी तत्त्वों को लेकर विश्व स्तर तक हिंदी को पहुँचाना और विश्वशांति का संदेश देना।

आज वैश्विक परिदृश्य में हिंदी ने अपना अलग स्थान निर्माण किया है। विश्व हिंदी परिषद तथा सम्मेलनों ने बखूबी अपना कर्तव्य निभाया है। भाषा प्रौद्योगिकी जैसे विषय को लेकर हिंदी में अनुसंधान हो रहे हैं और पाठ्यक्रम में भी उसको पढाया जा रहा है। शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर में तो श्रीलंका की एक छात्रा ने भाषा प्रौद्योगिकी के सहयोग से अपनी उच्च शिक्षा पूरी की है

निष्कर्षतः वैश्विक परिदृश्य में संतकाव्य से लेकर 21 वीं सदी तक हिंदी ने अपना कार्य निभाया है। आज भ्रष्टाचार की समस्या, आतंकवाद की समस्या, पारिवारीक विघटन की समस्या, सेहत संबंधी समस्या जितनी भी विश्वस्तर की समस्याएँ इसका समाधान हमें हिंदी संत साहित्य तथा हिंदी भाषा के साहित्य में होता है। निश्चित रूप से आज युवावर्ग तथा नयी पीढ़ी को हिंदी साहित्य नीतिपरक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक आदि दृष्टि से उपयोगी सिद्ध होता है।

संदर्भ

1. हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेंद्र
2. हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, डॉ. शिवकुमार सिंह

अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
मातोश्री बयाबाई श्रीपतराव कदम कन्या
महाविद्यालय, कडेगांव, सांगली (महाराष्ट्र)